९. जब मैं था, तब तू न था, तू जो मिला मैं नाय।
प्रेम गली अति सांकरी, ता मैं द्वै न समाय॥

शब्दार्थ—जब तक मेरा अस्तित्व अथवा मुझ में 'मैंपन' था—तब तक तू मुझे नहीं मिल सका। जब तू मिल गया तो मेरा 'मैं' स्व नष्ट हो गया अथवा जब मेरा 'मैं' नष्ट हुआ, तब तू मिला। क्योंकि प्रेम (भक्ति) का—यह मार्ग अत्यंत संकरा है। इसमें दो (व्यक्ति) एक साथ नहीं समा सकते। जब समर्पण द्वारा दो व्यक्ति एकाकार हो जाएं तभी प्रेम मार्ग में गति होती है।

१०. मैं जानूं हरि सौं मिलूं, मन में मोरी आस।
मारग डाले अन्तरा, माया पड़ी पिसाच॥

शब्दार्थ—मेरे मन में प्रभु से मिलने की बड़ी उत्कट इच्छा थी। (भजन/साधना/उपासना/भक्ति आदि करके या करते हुए) मैं समझता था कि मैं प्रभु से मिल रहा हूँ (या मिलने की दिशा में बढ़ रहा हूँ—पर यह नहीं समझ सका कि) मार्ग में/बीच में तो अन्तर/भेद/बाधा डाले हुए (अथवा मार्ग रोके हुए) माया रूपी पिशाचनी पड़ी हुई है।

११. कबीर मन मरकट भया, नेक न कहुं ठहराय।
राम नाम बांधे बिना, जित भावै तित जाय॥

शब्दार्थ—कबीर कहते हैं कि यह मन बन्दर के समान चंचल और उश्रृंखल हो गया है। ज़रा देर भी एक स्थान पर नहीं ठहरता। इसे राम के नाम के साथ बांध कर रखना पड़ेगा। अन्यथा इसकी जिधर इच्छा होगी उधर ही यह दौड़ता फिरेगा।

१२. माया माथे सींगड़ा, लम्बे नौ-नौ हाथ।
आते मारे सींगड़ा, जाते मारे लात॥

शब्दार्थ—माया के माथे पर नौ हाथ लम्बे सींग होते हैं। वह जब आती है तो सींगों से प्रहार करती है, जब जाती है तब लात से प्रहार करती है। (अर्थात् माया आए या जाए दोनों ही सूरत आदमी के लिए कष्टकारी होती है।)